मनुष्य बनो

गाल फकीरचन्दजी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१— शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२— सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी०पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ४-५० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफसाफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

देवीचरन मीतल

सम्पादक

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदः पूर्णात्पूर्णा मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

जनवरी
१९७४

❀ मनुष्य बनो ❀

वर्ष २२	मार्गशीर्ष सं० २०३० वि० जनवरी १९७४	संख्या ४/२५३

प्रार्थना

सदा नाम से लौ लगाया करो तुम ।
सुफल अपना जीवन बनाया करो तुम ॥
बसाकर गुरु मूरति मन के मन्दिर ।
सिर्फ प्रेम दीपक जलाया करो तुम ॥
कभी तो खबर उन्हें हो रहेगी ।
करुण राग अपना सुनाया करो तुम ॥
वह दाता दयालु अवश्य देंगे दर्शन ।
सदा ध्यान उनका लगाया करो तुम ॥
भजन ध्यान से भटकने न पावे ।
निठुर मन को निस दिन चिताया करो तुम ॥
मिलेंगे गुरु अपने जीवन के साथी ।
तड़प मन में दर्शन बढ़ाया करो तुम ॥
मनोकामना होगी पूरन तुम्हारी ।
राधास्वामी का नाम गाया करो तुम ॥

संरक्षक
द

मानसिक अवस्था

मन को समझना कठिन काम है। इस त्रिगुणात्मक जगत में जो कुछ है वह सब मन का खेल है। मन से हम अपने संसार की रचना करते हैं। वह ठीक इसी प्रकार है जैसा कि शास्त्र कहते हैं कि भगवान ने संकल्प किया कि 'एकोहम बहुस्यामि अर्थात् एक से अनेक हो जाऊँ'। इसी तरह हम सन्तान भी पैदा करते हैं, अपना आचरण भी अच्छा या बुरा बनाते हैं। आचार विचार, व्यवहार, कारबार यह सब पहिले मन से ही आरम्भ होते हैं। मन में किसी विचार के आये बिना कोई कार्य नहीं होता। मकान के बनाने बनाने वाला पहले अपने दिमाग में उसका नक्शा बनाता है। जब वह बन जाता है तब उसका बाहरी ढांचा बनने लगता है। इसलिये जितने भी भले या बुरे कर्म हैं पहिले मन में आते हैं। ऐसी दशा में इस मन को समझना, संभालना और वश में रखना परमावश्यक है।

मन की समझ

हमारे अस्तित्व में तीन शरीर हैं :—स्थूल, सूक्ष्म और कारण। स्थूल शरीर तो यही है जिसे हम देखते हैं। सूक्ष्म शरीर वह है जो दिखाई नहीं आता। वह है मन। स्थूल शरीर वही काम करता है जिसके लिये मन आज्ञा देता रहता है। आज्ञा दी नहीं कि सब इन्द्रियाँ काम करने लग जाती हैं। स्थूल शरीर तो काम करते करते थक जाता है मगर मन की शक्ति इतनी अपार है कि वह कभी थकता नहीं। जाग्रत में तो हर समय काम करता है अर्थात् कुछ न कुछ सोच विचार करता ही रहता है। एक क्षण को भी चुप नहीं बैठता। सोते समय भी चुप नहीं रहता। स्वप्नावस्था में अपनी दुनियां बनाता है और उसमें खेलता है। केवल गहरी नींद में जाकर वह चुप होता है।

इसकी चाल इतनी तीव्र है कि एक मिनट में हजारों लाखों मील की यात्रा कर जाता है। जो इसको साधन अभ्यास करके वश में करना जानते

हैं उनमें सिद्धि शक्ति आजाती है और अनेक प्रकार के चमत्कार कर दिखाते हैं। आज के विज्ञान ने जो इतनी उन्नति की है यह सब मन के कारण है। संतों, योगियों और महात्माओं ने जो रचनायें की हैं, रिसर्च की हैं; आत्म-ज्ञान प्राप्त किया है यह सब मन को वश करके ही किया है।

इस मन के ऊपर अनेकानेक ग्रंथ रचे गये हैं। इसी को संभालने, सुधारने और वश में रखने को संत महात्मा उपदेश देते हैं। अतः इस मन को समझना आवश्यक है। (क्रमशः)

—:०:—

शुभकामना

श्री मोहनलाल नैयर, के/१० कीर्तिनगर, न्यू देहली ने अपने सुपुत्र के विवाहोपलक्ष में १०) 'शिव' को तथा १०) 'मनुष्य बनो' के लिये भेजे है। मालिक से प्रार्थना है और हमारी शुभकामना है कि वर वधू का जीवन सुख शान्तिमय हो तथा उनका कल्याण हो। —देवीचरन मीतल

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज की जीवन झाकियाँ या जीवन चरित्र

'शिव' मासिक पत्र में शीघ्र ही छपने जा रहा है। जो सज्जन लेना चाहें वह शीघ्र सूचना दे दें ताकि उनके लिए रक्खी जा सकें।

—देवीचरन मीतल

शोक समाचार

खेद है कि संत सेवासिंह जी, सेवानगर, न्यू देहली की माता जी का स्वर्ग-वास होगया है। गुरुदेव से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति दें और अपनी गोद में बासा दें। —देवीचरन मीतल

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज का बसंत दौरा प्रोग्राम

ता०	प्रस्थान स्थान	पहुँच स्थान	समय पहुंच	समय प्रस्थान
१५-१-७४	होशियारपुर से			५-१५
१६-१-७४		न्यू देहली	२०-४०	
१६-१-७४	न्यू देहली			२२-१०
१७-१-७४		नागदा	१३-४२	
		"		१४-५०
		उज्जैन इन्दोर	१६-२८	—
२३-१-७४	उज्जैन इन्दोर	"	१०-५५	११-२०
२४-१-७४	१४७, मालवीयनगर भोपाल		१६-३७	
	भोपाल से			१२-४५
"	—	इटारसी	१४-४५	
२६-१-७४	इटारसी से		"	११-४०
२७-१-७४		काजीपेट	२-३५	
३०-१-७४	काजीपेट से	सिकन्दराबाद को कार द्वारा		
२-२-७४	सिकन्दराबाद से	न्यू देहली को		२०-४५
४-३-७४		"		५-३०

महाराज जी का शिवरात्रि दौरा प्रोग्राम

तारीख	स्थान से प्रस्थान	पहुँच	समय
१७-२-७४	होशियारपुर		
१८-२-७४		वाराणसी	१७.३०
"	वाराणसी से	शिव समाधि गोपीगज	कार से
२१-२-७४	गोपीगज से	खानपुर	कार से
२४-२-७४	खानपुर से	वाराणसी	कार से
२६-२-७४	वाराणसी से	मुगलसराय कानपुर	दहली एक्सप्रेस से
२८-२-७४	कानपुर से	अलीगढ़	आसाम मेल
१-३-७४	अलीगढ़	विलारी	—
	अलीगढ़ में अधिक समय लग सकेगा		

(गतांक पृष्ठ ३६ से आगे)

सन्त ज्ञान

दुखी और अशान्त जीवों को जो कष्ट में हैं उनको धैर्य देना और शान्ति देना पीर का काम है। जो पीर को हरे वही पीर है।

कौन है शादां यहां, शादां फकत जाते फकीर।
खुश नहीं हरगिज तवंगर, माल व जर वाले अमीर॥
तर्क दुनियां तर्क उकवा, तर्क मौला कर दिया।
तर्क का भी तर्क है, इस तर्क से दिल भर गया॥
चश्म वहदत बीं मिला, वहदत का मंजर देखकर।
कर रहा है रात दिन, दुनियां की मंजिल का सफर॥
क्या है दुनियां ख्वाब है, और ख्वाब भी जाते फकीर।
दाम हिर्से माल व जर में, वह नहीं हरगिज असीर॥
खाक में दुनियां मिली, और खाक ही है वह मुदाम!
वह खुशी से शादमां रहता है, हरदम सुबहो शाम॥
आबिद व माबूदियत माबूद से आजाद है।
खुश मुजस्सिम खुश है दिलका, रूह का वह शाद है॥
जिसको देखो इस तरह, समझो वह है सच्चा फकीर।
दस्त गीरे दो जहां और दो जहां का है वह पीर॥

आगे महर्षि जी कहते हैं :—

आया जो कुछ भी समझ, तेरे लिये लिख दिया।
तूने फैलाया था दामन, आज इसको भर दिया॥

मैं महर्षि जी को परमात्मा समझ कर प्रेम करता था। वह कहते हैं कि मैंने तुमको सब कुछ बता चला। तुमने मेरे सामने झोली फैलाई थी, मैंने इसे भर दिया। मैं न गुरु हूँ न महात्मा। मेरे साथ तो गुरु ने भेद को समझाने के लिये एक खेल खिलाया था। वह कहते हैं :—

खेल खिलाऊँ सुगम सुहेला' सुरत शब्द मत गाऊँ ।
काल हिंडोले से तू बाचे, विधि विचित्र बतलाऊँ ।।
(यदि चाहो तो पूरा शब्द 'फकीर शब्दावली' से पढ़ लो)

शान्ति

न्यूटन बड़े वैज्ञानिक थे । उनकी थ्योरी है कि जब हमारा हाथ गति करता है तो यह गति आकाश तक प्रभाव करती है । वहाँ से लौटकर वापिस आती है । हमारे विचार में भी यही प्रभाव है । जो हम सोचने हैं, वह सब वहाँ तक जाकर वापिस आता है । विचार करने वाले पर प्रभाव होता है । अतः घृणा, द्वेष नुक्ता चीनी और बुरे विचार नहीं रखने चाहियें अन्यथा परिणाम बुरा होगा । इसलिये मैंने 'मनुष्य बनो' की आवाज उठाई है ।

जब तक इन्सानियत नहीं है या मनुष्यता नहीं है तुम्हारा आचरण ठीक नहीं है, तुम अभ्यास करोगे तो अभ्यास तुमको खा जायगा अर्थात् उसका बुरा परिणाम निकलेगा । हमारा इष्ट पद क्या है ? पहिले इन्सान बनो । जब इन्सान बन जाओगे तब अभ्यास के अधिकारी बनोगे ।

ब्रह्म सूत्र में भी यही लिखा है कि जिज्ञासु वह है जिसमें घृणा, द्वेष, मान, मोह, मद न हो अन्यथा प्रकाश ऐसे पुरुष के अन्दर कभी प्रगट न होगा । मन पवित्र हो, विचार शुद्ध हों, चित कोमल और निर्मल हो । सबके लिए प्रेम भाव हो । धार्मिक पक्षपात न हो । मनुष्य में जो घृणा है वह समाप्त हो जाय । मैं यह चाहता हूँ । यही मेरा मिशन है ।

आपको यह जीवन मिला है । आपको किस मंजिल या पद पर पहुंचना है । यदि इस स्थान को जाने वाला जानकार साथ है तो आप इष्ट स्थान पर पहुँच जाओगे । चलना तो आपको है । मैं तो धुर पद या स्थान तक पहुंच गया । महर्षि जी का कथन है :—

तूने फैलाया था दामन, आज इसको भर दिया ।
ज़ात में अपनी हूँ गुम, तुम भी गुम होना कभी ।।

इसका अर्थ यह है कि वह विश्वास दिलाते हैं और लिखते हैं कि मैं ज़ात (निज स्वरूप) में गुम हो रहा हूं ।

मंजिल मकसूद पर पहुंचोगे, यह सुन ले अभी।
इसलिये सबसे जियादा, मुझको तुझ पर नाज़ है॥
नाम रोशन तू करेगा, यह दिली आवाज है।

सन्तमत में गुरु का दर्जा सबसे बड़ा है। गुरु की शरण लो, तुम्हारा भी काम बन जायगा। मैं गुरु नहीं हूं। सांसारिक इच्छा पूरी करवाने के लिये जो गुरु भक्ति करते हैं वह पुरु भक्त नहीं हैं।

इल्म व अमल

('महर्षि शिव' कृत)

बात करते हो मगर, दिल की खबर कुछ भी नहीं।
क्या सुनें सुनने से, क्या होगा असर कुछ भी नहीं॥
है खुदी[1] ही में खुदा, और यह खुदी खुद है खुदा।
जब इधर कुछ भी नहीं, तो फिर उधर कुछ भी नहीं॥
अब्र[2] रहमत[3] की तरह, अश्क[4] मुहब्बत बरसें।
आब अगर इनमें नहीं, दीदयेतर[5] कुछ भी अहीं॥
दिलका दिलवर है खुदा. दिल में है उसका मसकन[6]।
न मकां में हो मकीं[7], फिर तो वह घर कुछ भी नहीं॥
इस जहां में नहीं, इन्सान से बहतर कोई।
यह न कहना कभी, भूले से बशर कुछ भी नहीं।
आदमी हो न कभी, आदमियत से खाली॥
बखत[8] वह कब है भला, जिसमें शमर[9] कुछ भी नहीं।
रो न 'जाबित' कि, फलक[10] डूबेगा आंसू से तेरे॥
क्यों समझ बैठा है, यह दीदये तर कुछ भी नहीं।

(सत्संगत जून १९३२ से)

शब्द अर्थ :—मैं पना (२) बादल (३) दया (४) आँसू (५) आंखों का पानी (६) निवास (७) रहना (८) कंजूसी (९) माल (१०) आकाश।

भक्त गाथा

[लाखा जी की कथा]

लाखा जी हनुमान बंशी मारवाड़ी थे। यह मालिक के नाम में बड़ी श्रद्धा रखते थे और साधुओं की सेवा प्रेम के साथ करते थे। इनकी प्रतिष्ठा और भक्ति भाव की यह दशा थी कि देश का राजा भी इनकी आज्ञा पालन करने में अपना सौभाग्य समझता था।

एक बार देश में सूखा पड़ी। साधुओं की जमघट इनके घर बराबर आने लगी। नाज की कमी से साधुसेवा ठीक नहीं हो सकती थी। इसलिये इन्होंने दूसरी जगह जाकर रहने का विचार किया। जिस दिन यह विचार उनके मनमें उत्पन्न हुआ उसी रात को स्वप्न में देखा कि भगवान कह रहे हैं। "लाखा जी और जगह न जाओ। यहाँ ही रहो। कल प्रातः काल एक गाड़ी पचास मन अन्न से लदी हुई और एक भैंस तुम्हारे घर आयेगी। नाज को घर में रखवा लेना और बिना हिसाब किताब किये हुए बराबर खर्च करते रहना। उसमें कमी न आयेगी और भैंस से दूध दही घी इत्यादि मिलते रहेंगे।" आंख खुल गई। लाखा ने यह स्वप्न अपनी स्त्री से कहा। वह बोली, "मालिक की दया से यह असम्भव नहीं है। वह अपने सेवकों और भक्तों का आप रक्षक है।"

दिन निकलते ही गाड़ी में गेहूँ आया। गाड़ी लाने वाला एक भेंस भी दे गया। स्वप्न की बात सच हुई। अब साधु सेवा का काम बड़ी उत्तमता से होने लगा। जो आया खाता पीता रहा। एक अहीर भक्त भैंस की सेवा का काम भी करने लगा।

किसी गाँव में एक मनुष्य अपनी दरिद्रता से महा दुखी था। उसकी विरादरी वालों ने नाज से उसकी सहायता की थी, वह वहीं बस गया।

सन्ध्या समय जब सब लोग चौपाल पर बैठते तो सहायता करने वालों

की बड़ी प्रशंसा किया करते थे। एक मनुष्य को उसकी नित्य की प्रशंसा बुरी लगी। वह बोल उठा "थोड़ा सा नाज क्या दिया कि राजा करण और बलि के समान दानी बन बैठे। दान देना बच्चों का खेल नहीं है।" जिस मनुष्य की सबसे अधिक प्रशंसा होती थी बिगड़ बैठा। तब इसने फिर कहा "भाई ! यदि तुमको दानी होने का अहंकार है तो लाखा भक्त को पचास मन गेहूँ और एक भैंस क्यों नहीं दे आते। तब मैं जानूं कि तुम सच्चे दानी हो।" वह इस कठोर बचन को न सह सका दूसरे दिन नाज से भरी हुई गाड़ी और एक भैंस लाखा को दे आया जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है। इसे भी भगवान की प्रेरण समझनी चाहिये। मालिक की दया से वह नाज खर्च करने पर भी कभी कम नहीं हुआ।

जब सूखा का साल व्यतीत हो गया लाखा जी को जगन्नाथ जी के दर्शन की इच्छा हुई। घर से चल निकले और मारवाड़ से पुरी तक साष्टांग दण्डवत करते हुये चले। जब निकट पहुँचे भगवान ने पुजारियों को स्वप्न दिया कि "मेरा एक भक्त राजस्थान से आ रहा है। एक सुमिरनी लाया है। उसे पालकी पर बिठाकर आदर के साथ मेरे पास लाओ।" पुजारी पालकी लाये। लाखा जी बोले 'मैंने प्रण किया है कि साष्टांग दण्डवत करते हुये दर्शन करूँगा। पालकी पर बिठाने से यह प्रण छूट जायेगा।" पुजारियों ने कहा "स्वामी की आज्ञा में चलना ही सेवक का मुख्य धर्म है।" फिर पालकी पर चढ़कर मन्दिर में आये और सुमिरनी भेंट की। जिस समय उसे कलाई में पहिनाया वह ऐसी फब उठी कि सब देखकर दंग रह गये। लाखा जी कुछ दिनों तक पुरी में रहे। यह प्रेम में ऐसे मग्न रहते थे मानो भंग पी रक्खी है।

लाखा जी की लड़की कुँआरी थी और विवाह करने योग्य हो गई थी। घर में क्या था ! दरिद्रता और निर्धनता। जगन्नाथ जी ने स्वप्न दिया "मंदिर के खजाने से रुपया ले जाओ।" यह रोने लगे "दाता ! मुझे भोग के लिये कुछ भेंट करना चाहिये न कि उलटे ही यहां से ले जाऊँ।" वहां से बिना

लिये दिये हुये जोधपुर चले आये। देश के राजा को भगवान ने रात में स्वप्न दिया "एक हजार रुपये लाखा जी को दे दो।" उसके आदमी रुपयों की थैलियाँ उनके घर लाये लाखा जी ने उसे भी हाथ नहीं लगाया क्योंकि वह भी निज परिश्रम की कमाई नहीं थी परंतु जब उनसे कहा गया कि 'जगन्नाथ जी की आज्ञा से राजा ने दिया है।" तो फिर कुछ भी उनसे कह न सके। सौ दो सौ विवाह में लगाया और सबका सब विवाह के बहाने से साधुओं के भण्डारे में खर्च कर दिया।

शब्द

१. साध है मेरे रूप अनूपम, अदभुत अधिक सोहाने।
मैं हूँ उनका रूप दिवाना, वह मेरे दीवाने ॥१॥
२. भक्त और भगवन्त में किञ्चित, भेद भाव नहिं होता।
भक्तों को तुम धार समझ लो, भगवत गंग का सोता ॥२॥
३. स्वामी सूरज सेवक किरनैं, करते दिव्य प्रकासा।
बुन्द सिन्ध में रहै समाया, लहै अनन्द विलासा ॥३॥
४. स्वामी गुप्त दास हैं परगट, यह सब कोई जाने।
दास गुप्त बन प्रगटै स्वामी, बिर्ला नर पहिचाने ॥४॥
५. प्रेमी प्रीतम प्रेम नगर में, हिल मिल करैं विहारा।
राधास्वामी भेद बतावैं, सार सार का सारा ॥५॥

सारभाव—जो लोग दिखावटी रूप से नहीं किन्तु सचमुच मालिक से प्रेम करते हैं, उसके जीवों की सहायता करना अपना कर्तव्य समझते है, मालिक हर समय उनकी सहायता करता है जैसा इस उपरोक्त कथा से प्रगट है। भक्त के वश में है भगवान !

परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज के

अनमोल बचन

(२६-९-१९७३)

मेरे जीवन का अनुभव है। मैं कह तो देता हूँ मगर आप लोग इसके अधिकारी नहीं हैं। प्रभु की अपेक्षा प्रभु का प्रेम बड़ा है। यदि गुरु गुरु या प्रभु प्रभु करते रहो लेकिन उससे तुमको प्रेम नहीं है तो तुमको कोई लाभ नहीं होगा। यदि होगा भी तो बहुत कम। गुरु का ध्यान करने से या गुरु का सुमिरन करने से तुम्हारा कल्याण नहीं होगा। गुरु के नाम से तुम्हारा कल्याण हो सकता है। गुरु क्या है ? तुम्हारा मन ही तो है। इसकी समझ मुझे सत्संगियों से आई। मैं तो कहीं जाता नहीं। गुरु ने नाम दिया हुआ है। गुरु का नाम क्या है ? सुरत से शब्द को सुनना और प्रकाश को देखना। इससे तुमको पूर्ण लाभ होगा। आप किसी भी जगह विश्वास रक्खो। तुम्हारी मनोकामनायें पूर्ण होंगी। भूत को वश करके भी मनोकामनायें पूरी हो जाती हैं। यदि आवागमन से बचना चाहते हो तो नाम को पकड़ो। तुम नाम समझते हो सहस्राकार, ओंकार, रारंकार, सोहंकार और सत्याकार को। जुबान से इन शब्दों का उच्चारण करना नाम नहीं हैं। मुँह से राम राम या राधास्वामी राधास्वामी कहने या मन से इन शब्दों का जाप करने से मनानन्द मिलेगा। यह मन का आनन्द या खुशी है। संसार से पार जाने के लिये अपने अन्तर के स्थानों के शब्द सुनो। तब बेड़ा पार होगा। मैं स्वयं साधन करता हूँ।

इस अनुभव ने मेरे जीवन को बदल दिया मगर यह सर्व साधारण की चीज नहीं है। तुम लोगों को सांसारिक पदार्थ चाहियें। इसके लिये कोई नाम जपो और जहां तुम्हारा जी चाहे विश्वास रक्खो। नाम लेने के लिये गुरु प्रेम है। यह रहस्य कोई नहीं बताता। दुनियाँ की दशा देखो। यदि वह किसी के पास कोई नुसखा है या कोई विशेष प्रभावशाली दवाई है तो

किसी को बताता नहीं। साथ लेकर ही मर जाता है। ऐसे ही सन्तों ने भी पर्दा रक्खा किन्तु मैंने नहीं रक्खा। मैं महात्मा दयाल दास और कृषक जी आदि का बहुत आदर करता हूँ क्योंकि ऐसे लोगों के कारण मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ है। यह इन लोगों का अहसान है। मैंने इन लोगों से नहीं खाया। यह बिहारी लाल पाठक आया हुआ है। इसकी स्त्री की चिट्ठी ने मेरी आँख खोल दीं। आध्यात्म (रूहानियत) का तो कोई ही इच्छुक होता है। सब साँसारिक पदार्थ चाहते हैं और मनानन्द चाहते हैं। यह कर्त्तारसिंह या व्यास क्या आध्यात्म के लिये मेरे पास आये हैं? सब पेट के लिये आते हैं। यदि किसी समय इनका पेट भर जाये तो हो सकता है कि इस ओर आ जायें। दुनियाँ में सबसे पहिले रोटी चाहिये। अतः इसके लिये काम करो। मैंने इसलिये "इन्सान बनो" की आवाज उठाई है। मैं जानता हूँ कि दुनियाँ वालों को इसकी आवश्यकता नहीं है।

मेरा साधन अब बहुत ऊँचा है। मुझे इससे अनुभव आनन्द मिलता है और मेरे सारे काम भी होते रहते हैं। तुम उसके हो जाओ और वह तुम्हारा हो जायगा।

मन से तो शायद कोई काम पूरा न हो मगर सुरत से या नाम के अभ्यास से तुम्हारे सब काम पूरे हो जायेंगे। यह मेरी पिछली आयु के सत्संग हैं। कभी समय मिले तो इनको प्रकाशित करवा देना ताकि लोगों का अज्ञान दूर हो। मेरा रूप जो लोगों के अन्तर प्रगट होता है इसका सम्बन्ध मन से है। रूहानियत या सुरत से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

थोड़ा थोड़ा अभ्यास किया करो। गुरु मूर्त्ति ने तुमको पार नहीं करना। नाम ने पार करना है। मैं तो जब अभ्यास करता हूँ तो जीवन की आस (आशायें) छोड़ कर करता हूँ। जब दुनियां छूट जाती है तब नाम का आनन्द मिलता है। जो दुनियाँ को नहीं छोड़ सकते उनको यह आनन्द कैसे प्राप्त हो। दुनियाँ हर एक वस्तु को मुफ्त लेना चाहती है मगर मुफ्त में कभी भी किसी को कोई वस्तु नहीं मिलती।

सन्त की महिमा

]ले० सेठ दुर्गादस, चण्डीगढ़[

सन्त, परमसन्त और आदिसन्त, शब्दअभ्यासी, सचखंड के मालिक, अलख, अगम और अनाम देश के बासी, सर्वहितकारी, प्रेम के सागर होते हैं। वह ईश्वर नहीं बनते। न अपने आप को ईश्वर कहते हैं। अहं ब्रह्मास्मि नहीं कहते। अनलहक नहीं कहते। अपने आप को छोटे से छोटा बन्दा कहते हैं।

नानक नन्हा हो रहे. जैसी नन्ही दूब।
बड़ी घास जल जायगी, दूब खूब की खूब ।।

जो इनके निकट आया, गले लगाया। चाहे वह चोर हो, हत्यारा हो, डाकू हो, पापी हो। वह किसी के दोष नहीं देखते। वह किसी की निन्दा नहीं सुन सकते। हमेशा सचाई का साथ देते हैं। मौज आधीन जीवन बिताते हैं। साक्षात् शान्ति का रूप होते हैं।

जो शरण में आता है, उसकी सहायता करते हैं। उसके पाप क्षमा करते हैं। इसको मनुष्यता का पाठ पढ़ाते हैं। वह जानते हैं कि धोबी के घाट पर हमेशा गंदे कपड़े आते हैं इसलिये हर धर्म सम्प्रदाय के साथ समान व्यवहार करते हैं। सबको समान दृष्टि से देखते हैं। वह गरीबों के साथ गरीब, दुखियों के साथ दुखी, अमीरों के साथ अमीर, साधु और हंसों के साथ साधु और हंस बनकर व्यवहार करते हैं।

जो उनके सम्पर्क में आता है, प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकता। वह एक प्रकार का आकर्षण महसूस करता है। इनके दर्शनों से शान्ति मिलती है। आंख से आँख मिलाकर देखो तो सही। भाग्यशाली वह है जिनको ऐसे महापुरुषों की सेवा का अवसर मिलता है। इनको दीन और दुनियाँ दोनों मिल जाते हैं। आंखों देखी बात कह रहा हूं।

इनके जीवन का हर काम और बचन प्रभावपूर्ण होता है। आध्यात्म की ओर जीवों को ले जाता है। दया और कोमल चित्त से जीवों का सुधार बचनों और संकेतों से करते हैं। इनका जीवन सब के लिये एक आदर्श बन जाता है। इनके शिष्य यद्यपि इनको चमत्कार पूर्ण समझते हैं लेकिन वह स्वयं चमत्कारों के विरुद्ध होते हैं। इनका हर एक बचन और हर एक काम चमत्कारों से परिपूर्ण होता है क्योंकि कुदरत इनकी सहायता करने के लिये हर समय तत्पर रहती है। जो इनकी शरण में आता है उसे आत्मिक जीवन मिल जाता है और उसे सत का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

जो काल भगवान का अवतार होते हैं वह अपना काम तलवार के बल से करते हैं। बलिदान करते हैं। वह दुनियाँ में अन्याय के विरुद्ध लड़ते हैं। मानो कि यह मानना पड़ेगा कि इस सृष्टि में जब से यह बनी न्याय और अन्याय का दौर दौरा हमेशा रहा है और रहेगा। अन्याय, बेईमानी, लड़ाई झगड़े आदि कभी दूर न होंगे। चाहे कितना ही बड़ा महापुरुष अन्याय आदि को दूर करने के लिये युद्ध करे या बलिदान करे, इस दुनियां में कोई अवतार आये, इससे अत्याचार दूर होना सम्भव न होगा।

जब हर एक कर्म का फल अवश्य मिलकर रहेगा जैसा कि स्वामी जी ने कहा है—"जो जो कर्म करेगा तू, अन्त में भोगना पड़ना", जब अनहोनी कभी नहीं होती और होनी होकर रहती है, फिर प्रश्न होता कि सन्तों की दया या चमत्कार की क्या गुन्जाइश है। दुनियां उन्नति के मार्ग पर है। 'क्यों' और 'कैसे' का युग है। इसलिये आजकल की सभ्यता और शिक्षा ऐसे प्रश्न करने पर विवश है।

सन्त जीवों पर यह दया करते हैं कि सत्संग द्वारा जीवों की परेशानी दूर करते हैं। इनको शान्ति देते हैं। ज्ञान देकर जीव के दुख को और बोझ को हल्का कर देते हैं। वह कर्म के दुख को फिर महसूस नहीं करते। जीव को ऐसा महसूस कराना सन्तों की दया और कृपा है। इनके चमत्कार के बारे में यह है कि इनमें भेद-भाव नहीं रहता। सबको एक जैसा समझते हैं। आत्मिक अवस्था में रहने के कारण इनका मस्तिष्क शीशे की तरह स्वच्छ

होता है। अनजाने इनके मुंह से ऐसे बचन निकल जाते हैं सहज स्वभाव से, जो पूरे हो जाते हैं। इनके मुंह से ऐसे ही बचन निकलते हैं जो पूरे होने होते हैं। इनको स्वयं इनका ज्ञान नहीं होता न इसका अहंकार होता है। इसको जीव करामात कहकर पुकारते हैं।

इनका भोजन सादा और सात्विक होता है। थोड़ा खाते हैं। केवल बनास्पति का प्रयोग करते हैं। माँस और मादक पदार्थों का प्रयोग नहीं करते।

संतों का चेहरा हँसमुख और दोषहीन होता है। शरीर सुडौल, माथा चौड़ा, चमकीले नेत्र होते हैं। जैसे पानी ऊंची जगह नहीं ठहरता किन्तु नीचे की ओर आता है, जब वृक्ष को फल आता है तो वृक्ष नीचे झुक जाता है, पृथ्वी जो सब चीजों का आधार है, पांव के नीचे रहती है, ऐसे ही सन्त होते हैं। पक्षपात और हठधर्मी से कोई लगाव नहीं। सबके साथी होते हैं। किसी धर्म और सम्प्रदाय के बन्धन में नहीं होते। स्वतन्त्र विचार वाले होते हैं।

पुरुष और स्त्री का भेद केवल शरीर और मन तक है। सुरत में न पुरुषलिंग और न स्त्रीलिंग है। जब तक जीव को इस बात का भेद-भाव है कि अमुक पुरुष है और अमुक स्त्री है, वह सुरत में नहीं ठहर सकता। स्त्री पुरुष का भेद समाप्त होने पर ही सुरत अपने अन्तर चढ़ाई कर सकती है।

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर, होशियारपुर ४-११-७३)

न काशी न काबा न कैलाश में है।
तू देख अपने घट में तेरे पास में है।।

॥ मनुष्य बनो ॥

तेरे घट के भीतर वह मालिक बसा है।
न मन्दिर न मसजिद न आकाश में है॥
नहीं खाली उससे यह सारा जहाँ है।
कहाँ देखता किसकी तलाश में है॥
लगा बन्द तीनों सुरत को चढ़ाओ।
अनहद की धुन घट के आकाश में है॥
गंगा के जल से नहीं होगी तृप्ति।
चलो घाट मन के जो तू प्यास में है॥
वह व्यापक हो रग रग में आके समाया।
तेरी जान तन में तेरे पास में है॥
भरम मैं पड़ा तू किधर ढूंढ़ता है।
गुरु तेरे अन्तर वह प्रकाश में है॥
कहीं नाम है और कहीं बेनिशाँ है।
हमारे ही मन के वह विश्वास में है॥
राधास्वामी ने भेद अपना बताया।
उसे मिलने को युक्ति अभ्यास में है॥

हंसा हो मोती बरन नहीं चीना॥
पहर गूदड़ी भेष रमाये, जोर ते सन्त कहाये।
भेष लिये पर भेद न जाने, घर घर टुकड़ा खाये॥
हाथ कमण्डल गले मृगछाला, नगर फिरें जैसा भैसा।
खलरा ऊपर राख रमाये, मन जैसे का तैसा॥
तीरथ बरत में बहुत भरमना, बैल चले जैसे घानी।
काया में करतार बसत हैं, ताका भरम न जानी॥
पंछी के घोर मीन के मारग, अनुरागी लौलीना।
कहें कबीर सुन भरथरी जोगी, यह मारग है भीना॥

मैंने यह शब्द सुने। ऊपर के शब्द में लिखा है कि प्रकाश को देखो और शब्द को सुनो। साधन अभ्यास करो। यही मैं कहता हूँ। मैं प्रकाश देखता हूँ और सुनता हूँ। अपने आप से पूछता हूँ कि उससे तुमको क्या मिला ?

शुरू शुरू में मैं ब्राह्मण होने के नाते से ईश्वर और परमेश्वर को मानने वाला था। रामायण के संस्कार के अनुसार कि वह राम किसी न किसी रूप में संसार में आया करता है, मैं उसको मानव रूप में देखना चाहता था। मेरी तड़प या मौज मुझे दातादयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने मुझे राधास्वामी मत, कबीर मत या संत मत की शिक्षा दी। इसमें सबका खंडन था कि कोई ऋषि, महात्मा तथा कोई धर्म पंथ वहाँ नहीं पहुँचा। केवल संत मत ही पहुँचा है। अपने पूर्वजों के बारे में यह पढ़कर चित्त को ठेस लगी। चूंकि महर्षिजी को मैं राम का अवतार समझता था, इसलिये उनसे मेरा विश्वास नहीं टूटता था और बाणी को झूठ कहने का साहस भी नहीं होता था। तब मैंने प्रण किया था कि सच्चा होकर इस मार्ग पर चलूंगा और जो अनुभव होगा संसार को बता जाऊँगा।

मैंने प्रकाश देखे और शब्द सुने मगर शान्ति नहीं मिली। आनन्द बहुत लिया और प्रेम बड़ा किया। फिर शान्ति कब मिली ? जब आप लोगों से मुझे यह ज्ञात हुआ कि मेरा रूप आप लोगों के अन्तर प्रगट होकर अनेक प्रकार से आपकी सहायता करता है, चूंकि मैं नहीं होता और न मुझे कोई पता होता है तो मुझे निश्चय होगया कि इन्सान के अन्तर में जितने रूप रंग, भाव विचार पैदा होते हैं यह संस्कार हैं और केवल प्रतिबिम्ब हैं। है नहीं मगर भासते हैं। इससे मुझे समझ आई कि :—

न काशी न काबा न कैलाश में है।
तू देख अपने घट में तेरे पास में है॥

इन अनुभवों ने मुझे यह मानने को विवश कर दिया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और न कोई और ही किसी के अन्तर जाता है। फिर कौन जाता है? मनुष्य का अपना विश्वास। यदि मनुष्य किसी एक जगह पर

पूर्ण रूप से विश्वास रख ले तो वह अवश्य फल लायेगा। यह शिक्षा जो मैं देता हूँ यह कही तो सबने ही मगर कही ऐसे ढँग से कि किसी की समझ में कुछ न आया। मेरी तरह स्पष्ट रूप से और समझा करके नहीं कहा। क्यों नहीं कहा ? यह तो उनको पता होगा लेकिन मैं यह समझता हूँ कि स्पष्ट कहने से न मान आदर मिलता है न मण्डल बनता है और न पैसा सिलता है। अब मुझे कौन देता है, सिवाय थोड़े से आदमियों के। जिनको असली बात की समझ आगई है, वह मेरी सहायता करते हैं। इसलिये यह महात्मा यद्यपि रहस्य को जानते हैं लेकिन पबलिक को बताते नहीं। यदि बतावें तो उनके डेरे नहीं चलते। एक तो यह बात है। दूसरी यह कि जीवों को असलियत को जानने की और अपने घर जाने की आवश्यकता नहीं है। वह तो सांसारिक पदार्थों के पीछे फिरते हैं। यदि उनको असली और सच्ची बात बतादी जाय तो उनका उत्साह,सहारा और विश्वास टूट जाता है। इसलिये शायद उन्होंने सचाई वर्णन न की हो। लेकिन मेरे जिम्मे गुरु की आज्ञा है कि चोला छोड़ने से पहिले शिक्षा बदल जाना, इसलिये जो मेरी समझ में आया, वह कहा। अच्छा किया या बुरा किया, इसका मुझे पता नहीं।

यदि तुम लोग संसार की वस्तुयें भी चाहते हो तो वह भी तुमको तुम्हारे विश्वास से ही मिलेंगी। इसलिये विश्वास का होना आवश्यक है। एक बीमार स्त्री रोहतक से आई हुई है। ४ वर्ष से बीमार है। अब मेरे पास आगई। कहती है कि बाबा जी आपको गुरु मानकर आई हूँ। या तो मुझे स्वस्थ कर दो या मार दो। चूंकि इसका मुझ पर विश्वास है और मेरे कहने के अनुसार वैद्य की या डाक्टर की दवा खा रही है, अब इसे काफी आराम है। तो इसको राजी कौन करेगा ? क्या मैं करूँगा ? नहीं, इसका विश्वास करेगा। मैं तो बीमारी की दशा में स्वयं डाक्टरों के पास जाता हूँ। यदि मैं नीरोग करने वाला होता तो अपने रोग को ठीक कर लेता। मैं हमेशा यह सोचा करता हूँ कि फकीर ! यदि अपने मान सम्मान और धन या मन्दिर को पैसे के लिये किसी से पर्दा रक्खोगे तो तुम कहाँ जाओगे ? कर्म का चक्र किसी को क्षमा नहीं करता, चाहे वह साधू हो, महात्मा हो,

संत हो या परमसंत हो।, इसलिये मैं डरता हूँ। यदि तुम मुझे ज्ञानदाता समझकर मेरी सेवा करते हो तो मैं लेने को तैयार हूँ। जो कुछ हमको मिलता है यह हमारे ही कर्म का फल मिलता है, चाहे वह प्रारब्ध कर्म हो या इस जन्म का हो।

कर्म क्या है ? हमारी वासना। इसलिये मैं हमेशा कहता रहता हूँ कि अपनी वासना को ठीक रक्खो। यदि तुम अपने स्वार्थ के लिये किसी को बदनाम करते हो या किसी को धोका देते हो तो तुम कर्म के चक्र या फल से नहीं बच सकते हो। चाहे तुम बाबा फकीर के पास चले जाओ या रामचन्द्र जी या कृष्ण जी के पास जाओ। कर्म के चक्र से तुमको कोई बचा नहीं सकता। स्वामी जी ने अपनी बाणी में लिखा है :—

कर्म जो जो करेगा तू, अन्त में भोगना पड़ना।

इसलिये तुम अपने मन में सबके लिये प्रेम रक्खो। किसी से घृणा मत करो। किसी से झगड़ा मत करो मगर यह संसार है और हम इस संसार में रहते हैं। तुमको क्रियात्मक (अमली) ढंग बताता हूँ कि एक आदमी तो प्रेम करता है मगर दूसरा घृणा करता है, उसको अकारण दबाता है। आदमी शराबी है किन्तु स्त्री नेक है। वह उसके साथ अकारण दुर्व्यवहार करता है। घर में मां, बाप, भाई, स्त्री और बेटे सब एक दूसरे के विरुद्ध हैं। तो हम कैसे सुखी रह सकते हैं। एक आदमी है। विवाह होता है। बाल बच्चे पैदा होते हैं। मां बाप चाहते हैं कि अपनी कमाई हमको दे। भाई भी यही चाहते हैं। स्त्री की दृष्टि भी उसकी कमाई पर है। राज्य भी टैक्स मांगता है। बाबा फकीर भी भेंट चाहता है। तो बताओ वह बेचारा कहाँ जाय।

मैं तो अपने आप को ९५ प्रतिशत बचा गया। यहाँ जितने आदमी मेरे पास आते हैं सब घर के झगड़ों के कारण आते हैं। बिहारीलाल पाठक को इसके लड़कों ने मारा और सड़क पर घसीटा। चन्दन दास की चिट्ठी आई। वह लिखता है कि मेरी स्त्री और लड़कों ने मुझे धक्के दिये। सब दुनियाँ

दुखी है। मैं चन्दनदास को अपने पास बुला लेता मगर इतना पैसा कहां से लाऊँगा। मैं इस समस्या को हल नहीं कर सका।

घर घर देखा एक ही लेखा। क्या पंडित क्या काजी शेखा ।।

मैं यह समझता हूँ कि यदि भाई भाई की या बाप बेटे की नहीं बनती तो अलग हो जाय। मन में हर समय कुढ़ते रहने से अलग हो जाना अच्छा है। दूसरे कोशिश करो कि कोई आदमी दूसरे का बोझ न बने। अपनी कमाई आप करो। मैंने बाप की कमाई नहीं खाई। भाई की कमाई नहीं खाई। तो सुखी रहने का तरीका यह है कि सबसे पहले अपने पाँव पर खड़े होने की कोशिश करो। जो बूढ़े कमाई कर सकते हैं लेकिन कमाते नहीं, वह अपराधी हैं। यदि कोई बूढ़ा कमाने के योग्य नहीं है तो लड़के का कर्त्तव्य है कि उसको रोटी कपड़ा दे। बीमारी की दशा में उसका इलाज कराये और उसे खुश रखने की कोशिश करे। इसके अलावा यदि वह कुछ और आशा रखता है तो वह अपराधी है। जो लड़के बूढ़े माँ बाप की सेवा नहीं करते वह भी अपराधी हैं। यह है शिक्षा जिसको मैं बदल रहा हूँ। कोई अमल करे या न करे इसका ठेकेदार नहीं।

गुरु अधिक अच्छी तरह जानता है कि जीव की भलाई किस बात में है। मुझे वेतन मिलता था और मेरा प्रोवीडेन्ट फन्ड भी कटता था। उस समय पाइयां जो एक पैसे की तीन होती थीं, प्रोविडेन्ट फन्ड कटने के बाद मुझे वेतन के साथ एक या दो पाइयां मिलती थीं। वह पाइयाँ मैं अपनी स्त्री को दिया करता था और कुल वेतन अपने पिता को देता था। बसरा बगदाद में मुझे काफी वेतन मिलता था। मैंने कुल रुपया अपने पिता को दिया।

मैं छुट्टी लेकर दाता दयाल के पास लाहौर गया। उन्होंने कहा कि फकीर ! अब तो तुम अमीर बन गये होगे। मैंने कहा हुजूर की दया है। उन्होंने कहा कि रुपया क्या करते हो ? मैंने बड़े गर्व से कहा कि महाराज ! अपने बाप को देता हूँ। क्यों देते हो ? मैंने कहा कि हुजूर ! उन्होंने मुझे पाला है। उन्होंने कहा कि तुम भी उनको पालो। सारा रुपया क्यों देते हो ? क्या तेरे बाप ने भी कभी अपनी सारी कमाई तुझ पर खर्च की ?

मैंने कहा—'नहीं'। लेकिन घर में मेरी माँ है, भाई है, उनको भी तो खर्च चाहिये। कहने लगे कि बेवकूफ ! तुम्हारे भी तो सन्तान होगी। इसलिये उनको खर्च की जितनी उचित आवश्यकता हो उतना रुपया दो।

मैं घर गया और पिता से कहा कि मैं अब आपको अस्सी रुपये मासिक दूंगा। यह आपके घर के लिये पर्याप्त हैं। वह नाराज हो गये। मैंने कहा कुछ भी कहो मगर गुरु की जो आज्ञा है मैं तो वह करूँगा। मेरे पिता ने लोगों को दस हजार रुपया कर्ज दिया हुआ था, वह सब का सब मारा गया। मैं तुम लोगों को आत्मज्ञान की शिक्षा नहीं देता क्योंकि दुनियां को इसकी आवश्यकता नहीं है। दुनियाँ को तो दुनियाँ में सुखी रहने की आवश्यकता है। लोग मेरे पास आते हैं। कोई कहता है कि लड़की की शादी नहीं होती। मैं उससे कहा करता हूँ कि क्या तूने मुझे पूछकर सन्तान पैदा की थी। सन्तान के विचार से तो कोई सन्तान पैदा नहीं करता। किसी का लड़का चोर बन गया। किसी का दुराचारी हो गया। किसी को जुआ खेलने की आदत पड़ गई। कोई शराबी है। अतः सन्तान को सन्तान की दृष्टि से पैदा करो अन्यथा मत करो। तुम्हारे मन में बड़ी शक्ति है। जैसा ख्याल वैसा हाल। जैसा विचार करोगे वैसा ही जीवन बनेगा। तो मालिक कहां रहता है ?

न काशी न काबा न कैलाश में है।
तू देख अपने घट में तेरे पास में है॥

मुझे समझ नहीं आती थी कि दाता दयाल जी महाराज कैसे मेरे पास हैं ? मैं तो उनको लाहौर में या राधास्वामी धाम में समझता था। यह समझ देने के लिये उन्होंने मुझे गुरु पदवी दी थी क्योंकि मैं सच्चाई पसन्द मनुष्य था और देखना चाहता था कि स्वामी जी के पास क्या हक था जो उन्होंने सबको काल और माया में बताया। मेरे पास प्रतिदिन चिट्ठियां आती हैं। लोग लिखते हैं कि बाबा जी ! आप हमारे अन्तर जाग्रत में या स्वप्न में या अभ्यास में आये और हमारा यह काम किया। लेकिन मैं तो होता नहीं तो फिर वह गुरु कौन है जो तुम्हारे अन्तर में रहता है। वह तुम्हारा

अपना मन है। तुम्हारा अपना ही मन है, तुम्हारा अपना ही आत्मा है और तुम्हारी अपनी ही सुरत है। तुम भूल में हो। दाता दयाल जी ने एक सत् संगी मेलाराम को लिखा था :—

घट में दर्शन पाओगे, सन्देह इसमें कुछ नहीं।
मैं तो घट में हूं तुम्हारे, ढूढ़ लो मुझको वहीं ॥
शब्द सुनते हो मेरा,अन्तर में चित को साधकर।
सुरत मेरा रूप है, इसको समझ लेना यहीं ॥

तुम्हारी सुरत ही सच्चा सतगुरु है। कोई महात्मा सच्ची बात नहीं बताता। तुमको भूल में रक्खा गया है। आप देखो कि यह गुरु लोग कहते हैं कि नाम ले लो। तुम्हारे अन्त समय गुरु आके ले जायगा। इसी एक ख्याल से लाखों सत्संगी बन गये लेकिन मेरा अनुभव इसके विरुद्ध है। मरते समय कई आदमी कहते हैं कि बाबा आया, पालकी लाया या हवाई जहाज लाया और प्राण त्याग दिये लेकिन मैं तो गया नहीं और न मुझे किसी की मृत्यु का पता होता है। फिर मुझे ख्याल आता है कि यदि कर्म का कानून ठीक है तो जिन महात्माओं ने बात को पर्दे में रक्खा, अपना झूठा प्रोपेगंडा करवाया और लोगों को अज्ञान में रख कर उनसे पैसा लिया, वह कहाँ गये होंगे और उनके जीवन का क्या परिणाम हुआ होगा ? बाबा फकीर गुरु नहीं है। बाबा फकीर ने तो तुमको असली और सच्चे गुरु का पता बताना है। जी चाहे मेरे सत्संग में आओ या न आओ। यदि यह समझते हो कि मेरे इन विचारों से किसी को लाभ पहुँच सकता है तो मन्दिर में चार पैसे दो अन्यथा मत दो।

तुमको असली और सच्चे गुरु को जानने पहिचानने और मिलने के लिये क्या करना चाहिये ?

हंसा हो मोती बरन नहीं चीना।
पहर गूदड़ी भेष रमाये, जोर ते सन्त कहाये।

आज कल जोर से सन्त बनते हैं। कैसे ? यदि मेरे पास काफी पैसा हो और मैं दुखियों, गरीबों और बीमारों की सेवा और सहायता कर सकता

हूँ तो लोग मेरे नाम का ढिंढोरा पिटाने लग जाते हैं और मुझे बड़ा भारी सन्त कहेंगे। यह है जोर से सन्त बनना। आजकल क्या हो रहा है? गद्दी का तो मैं नाम नहीं लेना चाहता। जो आदमी नाम दिलाने के लिये लोगों को उनके पास ले जाते है उनको पांच रुपया प्रति चेला दिये जाते हैं। इसको कहते हैं जोर से सन्त बनना। आजकल लोग घर से किसी कारण भागकर भगवें कपड़े पहन लेते हैं और सन्त कहलाते हैं। लोगों को डराते धमकाते हैं कि तुमको श्राप दे दूंगा। इसका नाम है जोर से संत बनना।

भेष लिये पर भेद न जाने, घर घर टुकड़ा खाये।

मैं भी तो बाहर जाता हूँ। लोग मुझे खाना खिलाते हैं। यह भी तो घर घर टुकड़ा खाना है।

हाथ कमण्डल गल मृगछाला, नगर फिरें जैसे भैंसा।
खलरा ऊपर राख रमाये, मन जैसे का तैसा॥

आजकल के भेषधारी साधु क्या करते हैं? हाथ में कमण्डल होता है, गले में मृगछाला होती है। शरीर पर राख मली हुई होती है। बाहरी स्वांग तो बना लिया मगर मन वैसे का वैसा ही है। मन में कोई परिवर्तन नहीं आया। गाँव गाँव फिरते हैं और लोगों को डराते हैं। यह है आजकल के साधुओं की दशा। दातादयाल जी कहते हैं :—

भरम में पड़ा तू किधर ढूंढता है, गुरु तेरे अन्तर वह प्रकाश में है।

मैंने आप लोगों को बताया है कि असली गुरु तुम्हारा मन है और सत्-गुरु तुम्हारी सुरत है।

मन ही गुरु है मन ही चेला, मन ही ब्रह्म संजोग।
मन ही का व्यौहार जगत में, नाहीं जानें लोग॥

तुम लोग बाबा फकीर को गुरु मानकर उसकी पूजा करते हो लेकिन जो कुछ वह कहता है उसको सुनते नहीं हो! तो क्या तुम भ्रम में नहीं हो। मैं तो किसी के अन्तर जाता नहीं लेकिन तुम लोग यह समझते हो कि हमारे अन्तर बाबा आता है। देवी देवता, राम, कृष्ण या गुरु जो भी तुम्हारे अंतर

प्रगट होता है वह तुम्हारे अपने विश्वास का रूप है। तुम्हारे ही विश्वास का फल तुमको मिलेगा। इसलिये अपने अन्तर प्रकाश को पकड़ो।

वह व्यापक हो रग रग में आके समाया।
तेरी जान तन में तेरे स्वाँस में है॥

हमारे अन्तर में क्या कुछ है? रक्त है, मन है, आत्मा है और सुरत है। बाहर से कोई गुरु नहीं आता। यह बिल्कुल सचाई है कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता।

कहीं नाम है और कहीं बेनिशां है, हमारे ही मन के विश्वास में है।

वह तुम्हारे ही मन का विश्वास है। दातादयाल जी के शब्दों में कोई धोका नहीं है। वह सत्संग में सैन बैन (संकेत) से काम लेते थे लेकिन मैं समझ नहीं सकता था। अब अनुभव के बाद बात समझ में आई है। चूंकि सैन बैन या इशारों को दुनियां समझने के योग्य नहीं है इसलिये मैंने सैन बैन को छोड़ दिया और यथार्थ रूप से बात बताता हूँ। बाबा सावनसिंहजी महाराज कहा करते थे कि तुम मेरी बात नहीं सुनते। कोई डंडे मार आयेगा और तुमको समझायेगा। वह मैं हूँ।

अभ्यास के समय तुम्हारे अन्तर रूप रंग, भाव विचार क्यों आते हैं। तुम्हारे मस्तिष्क पर जो संस्कार पड़े हुये होते हैं या उनकी जो फिल्म बनी होती है वही फिल्म साधन अभ्यास या स्वप्न में हमारे सामने आती है। उनके दृश्यों को सत मानकर हम उनमें फँस जाते हैं और हम प्रकाश की ओर नहीं जाते इसलिये आरम्भ या शुरू की अवस्था में सबसे पहले अपने अन्तर गुरु का प्रेम पैदा करो और उसकी फिल्म अपने अन्तर बनाओ ताकि बजाय दूसरी फिल्म के यह फिल्म तुम्हारे सामने आये। दातादयाल जी कहा करते थे कि जिस पर तुम्हारा विश्वास है या जहाँ तुमारा प्रेम है, उसका ध्यान धरो ताकि उसकी फिल्म तुम्हारे अन्तर बने। इससे दूसरी फिल्म दब जायगी। फिर रूप आयेगा। फिर प्रकाश आयेगा। जब प्रकाश आ जाता है तब रूप की आवश्यकता नहीं रहती। लेकिन मैं जब नीचे आता हूँ तो दातादयाल जी का ध्यान करता हूँ क्योंकि उनसे अगाध प्रेम था। यदि

चौरासी के चक्र से बचना चाहते हो तो प्रकाश और शब्द का साधन करो। यदि अपनी दुनियां बनाना चाहते हो तो अपने विचार को ठीक करो और अपनी नीयत को शुद्ध करो। यह संसार तो दुखों की खान है। संसार में जीना बड़ा कठिन है। मैं घर में रहता था। मेरा छोटा भाई भी घर में रहता था। मैंने सोचा कि यदि मैं यहां रहूँगा तो झगड़ा होता रहेगा। अतः मैंने अपना घर होशियारपुर में बना लिया। इसलिये जहां तक होसके झगड़ों से बचकर रहो। झगड़ों और मुकदमों पर व्यर्थ पैसा व्यय होता है। आज कल इस मँहगाई के कारण पेट भरना भी कठिन हो रहा है।

मैं नौकरी पर था और मेरे बूढ़े पिता जी गांव में रहते थे। अपनी विरादरी वाले उनको व्यर्थ तंग करते थे। उन्होंने मुझे चिट्ठी लिखी। मैंने दत्त दयाल जी को चिट्ठी लिखी तो उन्होंने लिखा :—

कोई दुख सुख का नहीं दाता, तेरी है भूल सब।
कर्म अपने करते हैं, अनुकूल और प्रतिकूल सब ॥
कर्म की प्रधानता की, क्या नहीं तुझको समझ।
कर्म से आनन्द है और, कर्म ही से सूल सब ॥

इसी शब्द में आगे लिखते हैं :—

किस भरम में तू पड़ा, औरों की बातें छोड़ दे।
काम में लग अपने करले, कर्म निज अनुकूल सब ॥
राधास्वामी नाम भज, झगड़ों से बचकर रह सदा।
जो नहीं समझा तो, पढ़ना लिखना है धूल सब ॥

आप लोग गृहस्थी हैं। जहां तक हो सके घरों में झगड़ा मत करो। सुनो :—

हार चले सो संत है, और जीत चले सो नीच।

हम गृहस्थी लोग थोड़ी थोड़ी बात पर घरों में झगड़ा कर देते है और फिर दुखी होते है। मेरा एक पड़ौसी व्यर्थ झगड़ा किया करता था। मैंने उसे प्रेम से उत्तर दिया। उससे प्रेम किया। परिणाम यह हुआ कि वह मुझ पर जान देने को तैयार है। यह गृहस्थ में जीने का ढंग है। रामराम

कहने ने तुम्हारे गृहस्थ को ठीक नहीं करना और न राम राम कहने मात्र से तुम पार जा सकते हो। गुरु ज्ञान तुम्हारी सहायता करेगा।

मेरी ड्यूटी है निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता करना। मैं फूंक मारकर तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता। ठीक राय देता हूँ। झगड़ों से बचो और अपनी जुबान को काबू में रक्खो। नहले पर दहला मत मारो। आजकल संतान अधिकतर बूढ़ों की सेवा नहीं करती। क्यों? इन बूढ़ों को भी जीना नहीं आता। यह सन्तान पर हुकूमत करना चाहते हैं। आजकल कौन सहन करता है। इनको सेवा करानी नहीं आती। सन्तान को प्रेम से बुलाओ। वह भी तुम्हारा आदर करेंगे। क्या लेना है तुमने हुकूमत करके? मैं सन् १९३९ ई० के बाद एक बार धाम गया तो वहाँ श्री हरीस्वरूप गुप्ता का पिता मुझे मिला। उसकी दृष्टि कमजोर थी और बुढ़ापा था। रोने लग गया कि महाराज! अब दाता दयाल जी तो चोला छोड़ गये। अब किससे फरियाद करें। घर वाले सेवा नहीं करते। दुखी हूँ। यदि किसी गद्दी वाले के पास जाता हूँ तो वह कहते हैं कि नये सिरे से नाम लो। मैंने कहा कि कुछ दिन मेरे साथ रहो। सत्संग से धर्म का भ्रम तो मैंने दूर कर दिया। उससे मैंने कहा कि मेरी एक बात मानो और उस पर चलो। फिर यदि तुमको कोई शिकायत घर वालों से हो तो मैं जिम्मेदार हूँ। मैंने उससे कहा कि यह बात स्वप्न में भी मत सोचो कि तुम्हारा परिवार बुरा है। यदि घर में तुमको सूखी रोटी भी मिले तो तुम बाहर लोगों से कहो कि मुझे पराँठे मिलते हैं किंतु कहो सच्चे दिल से। मन में कपट रखकर नहीं। अपनी बहू और अपने पोते पोतियों से प्रेम का व्यवहार करो। कई वर्ष के बाद फिर दहली गया तो वह फिर मेरे पास आया। उसने बताया कि महाराज! आप की नसीहत पर चलने से मैं सुखी होगया। घरवाले प्रेम से मेरी सेवा करते हैं और मैं बहुत खुश हूँ।

अब समय बदल गया है। समय के साथ जो अपने आप को नहीं बदलता वह दुख उठाता है। मुझे अपने लड़के से कभी कोई शिकायत का अवसर नहीं मिला। मैंने उससे कह रक्खा है कि अपनी स्त्री की इच्छा अनुसार मुझे

भेजा यद्यपि मेरी बहू मेरे लड़के से भी अधिक मेरी सेवा करती है। यह तुम को जीने का रहस्य बता रहा हूँ। फिर यदि कोई दुख आ भी जाय तो उस को अपना कर्म समझो और खुशी से भोगो। यदि किसी से घृणा करोगे तो उसके फल से तुम बच नहीं सकते। मेरे एक मित्र अपनी स्त्री से घृणा किया करते थे। अब उनकी स्त्री पागल होगई है। इस कारण वह दुख उठा रहा है। शास्त्र कहते हैं कि घृणा का फल दुख और अशान्ति है। उसका उपाय है किसी निर्बन्ध पुरुष का सत्संग। सत्संग से विवेक और समझ लो।

बिन सत्संग विवेक न होई। राम कृपा बिन सुलभ न सोई॥

तुम लोगों को साँसारिक सुख चाहिये। मालिक की तो तुमको आवश्यकता नहीं है। जो निवृति मार्ग चाहते हैं उनको प्रकाश और शब्द का साधन है। सबसे पहिले घरों में शान्ति रक्खो। इस कान सुनो और उस कान निकाल दो। तब तुम सुखी रह सकते हो। यह है सत्संग। ज्ञान की गंगा बह रही है इसमें नहा लो। यदि नहीं नहा सकते तो कम से कम छींटे ही लेजाओ। यदि छींटे भी नहीं ले सकते तो गंगा के किनारे ही बैठ जाओ। और कुछ नहीं तो तुमको ठंडक तो अवश्य मिलेगी।

दाता दयाल जी महाराज कहा करते थे कि गगा बह रही है कुछ ले जाओ। उस समय मैं सोचा करता था कि यह क्या देते हैं। अब समझ आई। इसलिये कहता हूँ कि ज्ञान ले जाओ ताकि तुम्हारा गृहस्थ का जीवन सुखी हो जाय। यदि में आध्यात्मिक बात करूँ तो वह तो तुम समझ नहीं सकते इसलिये ज्ञान देता हूँ। सुनो ! जो मेर तेर अधिक करता है, वह दुखी होता है। मेरी स्त्री में मेर तेर अधिक थी। मैं उससे कहा करता था कि तेरी यह आदत दुख का कारण बनेगी। अन्तिम आयु में वह छः सात वर्ष बीमार रही। हमारे शरीर का स्वास्थ्य हमारे विचारों पर निर्भर है। जिसके जितने अच्छे विचार होंगे वह उतना ही अधिक प्रसन्न रहेगा। बीमारी का सम्बन्ध विचारों के साथ है। मुझे पेशाब का रोग क्यों हैं ? इसका कारण मेरा बचपन का विषय विकार का जीवन था। इसलिये अपने विचारों को ठीक रक्खो और अपने मन को वश में रक्खो। चूंकि मन वश

में नहीं रहता इसलिये इसको एक इष्ट दो। तुम्हारी इच्छा हो राम को इष्ट बनाओ या कृष्ण को इष्ट बनाओ। चाहे देवी देवता या गुरु को इष्ट बनाओ मगर इस मन को एक इष्ट दो ताकि तरह तरह के विचार न उठाये। एक के सहारे अपना जीवन गुजारो। तुम्हारा ही मन तुम्हारा गुरु है। तुम्हारी सुरत ही तुम्हारा सतगुरु है। मन को बाहर के गुरु के आधीन करके उससे ज्ञान लो। केवल गुरु गुरु करने या गुरु का ढिंढोरा पीटने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। उसकी बात पर क्रियान्वित होने से तुम्हारा बेड़ा पार होगा।

गुरु हुये संसार में प्रगट, गुरु से ज्ञान लो।
छोड़ दो पाखंड को, गुरुमत की महिमा जान लो॥

मैं तुम लोगों को सतज्ञान देता हूँ जिससे तुम लोगों का जीवन सुख से बीत जाय। जो बात गुरु कहता है उसको तो तुम लोग समझते नहीं हो और धन्य गुरु धन्य गुरु कहते रहते हो। क्या यह पाखंड नहीं है।

गुरु है ब्रह्मा, गुरु है विष्णु, गुरु ही शिव का रूप है।
ब्रह्म गुरु परब्रह्म गुरु, गुरु को सब कुछ जान लो॥

मैं जो कुछ मुंह से कहता हूँ यही मेरा नाम दान है। मेरे पास एक आदमी मानसिंह मौजा घमान जिला गुरदासपुर से आया करता है। उसने बताया कि जब वह १५–१६ वर्ष का था तो उस समय बाबा जैमलसिंह जी हमारे गाँव में रहा करते थे। एक बार उन्होंने कहा था कि जब पंजाब पर आग बरसेगी तो उस समय जो सन्त सतगुरु आयेगा वह जीवों को नाम नही देगा। अपने वचनों से जीवों का उद्धार करेगा। वह सन्त सतगुरु वक्त मैं हूँ। मैं नाम नहीं देता। बचन कहता हूँ। यदि तुम मेरी बात को समझ जाओ तो तुम्हारा लोक भी और परलोक भी बन जायगा।

कहीं नाम है और कहीं वे निशां है।
हमारे ही मन के वह विश्वास में है॥
राधास्वामी ने भेद अपना बताया।
उससे मिलने की युक्ति अभ्यास में है॥

राधास्वामी दयाल ने युक्ति बता दी कि ऐ इन्सान ! तेरी सुरत उस मालिकेकुल की अंश है। उसकी मौज से संसार में आई। यहाँ आकर माया अर्थात् बुद्धि के चक्र में आकर भ्रम में फँस गई। फिर अपने आदि घर जाने की इच्छा हुई। गुरु मिले। उन्होंने साधन बताया। उस पर अमल किया और अपने रूप का ज्ञान हो गया। समय आने पर अपने रूप में विलीन हो गये।

हंसा मोती बरन नहीं चीना।
पहर गूदड़ी भेष रमाये, जोर ते सन्त कहाये।
भेष लिये पर भेद न जाने, घर घर टुकड़ा खाये ॥

मैं संसार को भेद देता हूँ। पुस्तकें लिखता हूँ। सत्संग कराता हूँ। 'मानव कल्याण' मासिक यहां से निकालता हूँ और लोगों को मुफ्त बांटता हूँ। क्यों ? इसलिये कि जीवों को सच्ची समझ आजाय। वास्तव में सब तुम्हारा अपना ही विश्वास है। किसी ने आज तक यह सचाई स्पष्ट रूप से वर्णन नहीं की। सब तुमको अपने जाल में फंसाते हैं लेकिन मैं तुमको बंधनों से छुड़ाना चाहता हूँ। तुम्हारे अन्तर सब शक्तियाँ मौजूद हैं। तुम स्वयं पूर्ण हो मगर अज्ञान वश दूसरों के आश्रित बने हुये हो। मन ही तो है इस को जिस ओर चाहो लगाओ। एक आस और एक विश्वास रक्खो। मालिक सबके काम करता है।

हाथ कमण्डल गले मृगछाला, नगर फिरें जैसे भैंसा।
खलरा ऊपर राख रमाये, मन जैसे का तैसा ॥

यह भेषधारी साधू घर घर घूमते हैं। यदि कोई इनको भिक्षा नहीं देता है तो यह इनको घूरते हैं कि हम तुमको श्राप दे देंगे। जबरदस्ती लेते हैं।

तीरथ ब्रत में बहुत भरमना, बैल चलें जैसे घानी।
काया में करतार बसत है, ताका मरम न जानी ॥

तुम्हारे अन्तर जो कर्त्तार है वह है तुम्हारी आत्मा। इसका प्रमाण मुझे आप लोगों से मिला। जब मैं किसी के अन्तर नहीं जाता लेकिन मेरा रूप

आप लोगों के अन्तर प्रगट होकर आपकी सहायता करता है, तो वह सहायता करने वाला कौन है ? वह है तुम्हारी सुरत । इसलिये अपना सम्मान करना सीखो । आत्मसम्मान (**Self Respect**), आत्म निरोध (**Self Control**), आत्मरक्षा (**Self Defence**) और आत्म साक्षात्कार (**Self Realisation**) करने की कोशिश करो । यदि मन कमजोर है और तुम नहीं कर सकते तो एक इष्ट बनाओ । इसको पूर्ण मानो और उस का सहारा लो ।

पंच्छी के घोर मीन के मारग, अनुरागी लौलीना ।
कहें कबीर सुन भरथरी जोगी, यह मारग है झीना ॥

योग के चार मार्ग हैं—पिपीलिका मार्ग, कपि मार्ग, विहंगम मार्ग और मीन मार्ग ।

पिपीलिका मार्ग (चिऊँटी मार्ग) यह है कि जब साधन करो तो लम्बा करके करो । अर्थात् रा—धा—स्व—आ—मी । कपि मार्ग क्या है ? कपि कहते हैं बन्दर को । तुम ध्यान करते हो तो मन लगता नहीं । कभी कुछ सामने आता है तो कभी कुछ । तुम फिर ध्यान लगाने की कोशिश करते हो । मन फिर दूसरी ओर चला जाता है । तुम फिर उसे घेर घार कर लाते हो । जीव तीन प्रकार के होते हैं । रजोगुणी, तमोगुणी और सतोगुणी । इनके लिये भिन्न भिन्न मार्ग हैं । यह गुरु अधिक अच्छी तरह जानता है कि जीव के लिये कौनसा मार्ग लाभदायक है जिससे उसको शान्ति मिल सके । एक मीन मार्ग है । जैसे मछली पानी की धार को पकड़कर ऊपर जाती है ऐसे ही शब्द के सहारे ऊपर जाना पड़ता है । यह शब्द मार्ग है । जिसका शब्द खुला हुआ है उनको चाहिये कि अपनी सुरत को शब्द में पिरो कर ऊपर जांय । जिनके अन्दर शुभ विचार और प्रेम का माद्दा है उनको दांई ओर का शब्द सुनाई देता है । जिनके अन्तर साँसारिक वासनायें तथा घृणा, द्वेष और हेरा फेरी है उनको बाँई ओर का शब्द सुनाई देता है । जिनको सिवाय मालिक सर्वाधार की चाह के और कोई इच्छा नहीं है उनकी सुरत

सुषुम्ना नाड़ी में से होती हुई ऊपर को जाती हैं। इसलिये सबसे पहिले अपने मन को निर्मल करो।

जिनके मन गंदे हैं उनकी सुरत बांई ओर को जाती है। जिनके मन में भलाई और परोपकार है उनकी सुरत दांई ओर जाती है। जिनके मन में न नेकी है न बदी है, केवल अपने आदि घर जाने की इच्छा है उनकी सुरत सीधे ऊपर जाती है। जिस तरह बलगम छाती से निकलता है, टट्टी गुदा से और पेशाब मूत्रेन्द्रिय से निकलता है, ऐसे ही अच्छे विचार इंगला नाड़ी से और बुरे विचार पिंगला नाड़ी से और जो अच्छे हैं न बुरे हैं वह सुषुम्ना से। इसलिये सबसे पहले अपने मन को निर्मल करो। अन्यथा कोई गुरु तुम्हारे बाँये शब्द को बन्द नहीं कर सकता। मुझे आज तक कभी दाँई और बाँई ओर से शब्द नहीं आया। क्यों? यह मेरे पिछले जन्म के कर्म थे। जहाँ मैं पहुँचा हूँ यह एक जन्म का काम नहीं है। यह जन्म जन्मान्तर का क्रम है। प्रकृति के अनुसार अन्तर की चढ़ाई होती है। यह मार्ग बड़ा सूक्ष्म है।

सबको शान्ति!

निर्विकल्प समाधि

(ले० सेठ दुर्गादास, चण्डीगढ़)

गीता में श्री कृष्ण भगवान ने कहा है कि योगाभ्यास करने के लिये शुद्ध स्थान आवश्यक है। फूस का आसन हो। गर्दन और सिर सीधा रहे। कमर व पीठ सीधी हो। कोई भय न हो। मन में थकावट न हो। ब्रह्मचर्य दृढ़ हो। सचाई से जीवन व्यतीत किया जाय। इन्द्रियाँ वश में हों। मानसिक विचार एकाग्र किये जाँय। दृष्टि को नाक के सिर पर जमाकर ध्यान

लगाओ। दृष्टि इधर उधर न जाय। ऐसा योग अभ्यास मन पर काबू पाने के लिये किया जाता है।

यदि मन वश में हो चुका है, उसकी चंचलता चली गई है तो अभ्यास बन जायगा। ज्योतिस्वरूप का ध्यान बनने लग जायगा। पहिले पहिले बत्ती की लौ का ध्यान बनेगा। इसी बत्ती की लौ, जो शीशे वाले लैम्प की होती है, हिलती जुलती नहीं है, टिकी रहती है। ऐसे अभ्यासी के मन पर किसी शोक या हर्ष का खिचाव कम होता है।

ध्यान से प्रकाश प्रगट होगा। प्रकाश परमेश्वर का स्वरूप है। यदि प्रकाश प्रगट नहीं होता तो योगाभ्यास निरर्थक है क्योंकि फिर ऋद्धि सिद्धि आजायेंगी जो हानिकारक होंगी। इसलिये अभ्यास छोड़ देना चाहिये।

योग से आनन्द मिल सकता है। ऐसा योग कर्मयोग के लिये करना चाहिये। जिस जीव की समाधि उसकी प्रकृति के कारण नहीं आती, उसको चाहिये कि कर्मयोग की कमाई करे। कर्मयोग से भी शान्ति मिल सकती है। आवागमन से छुटकारा मिल सकता है।

कर्मयोग के लिए भोजन ठीक हो। न अधिक हो और न भूखा रहे। निद्रा भी ठीक हो। न अधिक सोये और न बिल्कुल जागता रहे।

कर्म करना और फल की इच्छा न करना कर्मयोग है। कर्म को भी मौज मालिक समझकर मालिक को अर्पण कर देना और कर्म इच्छा रहित होकर करना। ऐसे कर्मयोग से वैराग पैदा होता है। वैराग इच्छा रहित अवस्था को कहते हैं। केवल ऐसे महापुरुष जो निःइच्छित हैं, इनकी निर्विकल्प समाधि लग सकती है। मृत्यु समय इच्छा रहित होने पर परम धाम प्राप्त होगा। निः इच्छित महापुरुष के लिये स्त्री पुरुष का भेद-भाव समाप्त हो जाता है क्योंकि इसका बास सुरत के मण्डल में है। सुरत स्त्री पुरुष भेद रहित (Sexless) है। इस मण्डल में वही ठहर सकता है जिसका मन स्त्री और पुरुष भेद रहित होता है।

संतमत में वैराग नहीं है। प्रवृति मार्ग पर चलता हुआ पन्थाई निवृति मार्ग पर आ जाता है। मन के वैराग पर जोर दिया जाता है। मानवता के

के सिद्धांतों को अपनाना आवश्यक है। आत्मिक अवस्था से मानवता हजारों गुना बढकर है। स्वामी जी कहते हैं—कपटी जन शब्द न तापिया। धोखा देने वाले, मक्कार और स्वार्थी का भजन कभी न बनेगा।

—:o:—

नुक्ते

परम दयाल फकीरचन्दजी महाराज

नामधारी दुखी क्यों ?

सन्तों और ग्रन्थों ने नाम की महिमा गाई है कि नाम जप से पापी तर जाते हैं। इसका जवाब दिया जाता है कि वे पापी तर जाते हैं जिनको अपकी गंदगी और पाप का भान हो चुका है। जब पापी लोग अपने पाप को महसूस कर जाते हैं तब यदि उनको नाम दे दोगे तो हानि नहीं क्योंकि उनमें अपने को सुधारने और उच्च बनाने का भाव मौजूद है। नाम दान पापियों, गन्दे और पतितों को है मगर उनको जो अपनी गलती मान चुके हैं। मैं बात बड़ी स्पष्ट कह रहा हूँ। बात वही है जो सन्तों और ऋषियों ने कही है मगर यह शब्द मेरे हैं। पुरानी शराब नये कूजे में है !

यह मैं इसलिये कह रहा हूँ कि नामधारी अधिक दुखी हैं। ये क्यों दुखी हैं ? क्योंकि गुरु की बात को समझा नहीं गया। गुरु कहते हैं कि शराब न पियो, मांस न खाओ अथवा अमुक फल छोड़ दो। यदि मैं किसी को नाम दान दूं तो कहूँगा कि दूसरों का दिल दुखाना छोड़ दो, अहिंसा परमो धर्मः। यदि मैं यह भी नहीं कहता कि दूसरों का दिल दुखाना छोड़ दो तो मैं कहूँगा कि अपना दिल दुखाना छोड़ दो। जहाँ अपने दिल को दुखाया तो तुम्हारे अनाविष्कृत (**Sub-Conscious mind**) मस्तिष्क में चिन्ता हो गई।

किया। कृष्ण जी ने कहा कि दो जन्म और पीछे देखो। तुमने उस जन्म में कांटेदार झाड़ी से एक सांप को मारा था। उसके शरीर में भी झाड़ी के कांटे ऐसे ही गढ़े हुये थे जैसे अब यह तीर आपके शरीर में गढ़े हुये हैं। तुम समझते हो कि क्या तुम या कोई और सन्त महात्मा कर्म के फल से वच जायगा ? नहीं।

"दुर्लभ मनुष्य जन्म"

(ले० छेदालाल मित्तल, बनस्थली)

मानव की कथा भिन्न है। उसने वाणी का अद्भुत विकास किया है। विचारों का संग्रह करके संस्कृति एवं सभ्यता को जन्म दिया है। पाप पुण्य का विवेक उसमें जाग्रत हुआ है। मानव की आत्मा निद्रा के ओढ़ने को परे फेंक कर जाग उठी है। अंधेरे की चादर उसने उतार फेंकी है। अतः मानव का कर्तव्य मानव को झंझोड़ कर कहता है उठो, क्यों आंखें बन्द किए लेटे पडे हो ? तुम्हें दुर्लभ मानव शरीर मिला है जिसको तुम स्वेच्छा से बहुत सीमा तक चला सकते हो तथा अपने शरीर के स्वयं संचालन करने योग्य होगए हो। अंधेरा दूर हुआ, प्रकाश आगया है। भगवान तक पहुंचने का मार्ग खुल गया है। अब भी क्यों उल्लू की भांति आँखें बन्द किए मजबूरी की डाल से लटक रहे हो। अपने को समझो, होश में आओ। ज्ञान की बातें सुनो। उन पर चलो। इस मानव जीवन रत्न को क्यों कौड़ियों के भाव बेच रहे हो। **Eat, drink and be merry** (खाओ पियो और ऐश करो) को ही क्यों सब कुछ मान बैठे हो। यह रत्न अमूल्य है। उठो, जागो, श्रेष्ठजनों, अनुभवी महात्माओं के संग को प्राप्त करके बनाने वाले की सत्ता को जानो। अब निराश, हतोत्साह, दीन हीन बने रहने का तो कोई कारण नहीं। अंधेरा हट रहा है। प्रकाश आ रहा है।

परमदयाल फकीरचन्द जी कृत हिन्दी पुस्तकें

आध्यात्मिक पुस्तकें

मानव धर्म प्रकाश भाग १	)७५
मानव धर्म प्रकाश भाग २ (श्री दुर्गादास कृत)	१)
आवागवन उर्फ जीवन रहस्य	१)
सार का सार भाग १ व २	४)
गरुड़ पुराण रहस्य	१)५०
त सत्गुरु वक्त	१)५०
अगम वाणी भाग १, २, ३,	३)
सतपद	)५०
बारहमासा की व्याख्या	२)
रत शब्द योग	१)
निर्वाण से परे	१)
हद्दी या अपार के परे	१)२५
श्वर दर्शन	१)
ी धार्मिक खोज	१)२५
ह महिमा	१)
बन्दना	)७५
ायथ पुरुष	१)
र तत्व सचाई और शान्ति	१)
दि अन्त	१)२५
त्र नाम की व्याख्या	१)२५
ज्ञान दाता भाग १ व २	२)
म दान	१)
घर की खोज	१)
म विकास	१)
र्ण	१)
अनुभव ज्ञान प्रकाश	१)
ज्ञान योग	१)

अन्य धार्मिक पुस्तकें

सत सनातन धर्म या सत मानव धर्म	३)
जगत कल्याण	)७५
विश्व धर्म भाग १ व २	१)७५
फकीर बचनामृत	)५०
कर्म भोग या मौज भाग १व २	१)७५
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेंट भाग १ व २	२)२५
जगत निस्तार	१)२५
जगत उभार	१)
मानव कल्याण भाग १, २, ३, ४, ५	५)
अद्भुत मोती	)७५
५० वर्षीय फकीर अनुभव	)५०
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१)२५
मानवता युग धर्म	)५०
आकाशी रचना	)५०
आजादी की कुंजी	)५०
शिव फकीर पत्रावली	१)५०
हृदय उद्गार	१)
फकीर सार शब्द व्याख्या	१)
रचना का भेद	)७५
नव विवाहितों को उपदेश	)२५
उन्नति मार्ग	)२५
गूढ़ रहस्य व्याख्या	२)

Regd. No. ALG –28

महारामायण सजिल्द	७-००
गीता भाग १ व २	२-५०
आनन्द योग	४-००
राधास्वामी योग	६-००
कबीर योग भाग १, २, ३	५-२५
भक्तियोग रहस्य	१-००
Light on Anand Yog	३-००
आनन्द योग प्रकाश	२-५०
कबीर आद्य ज्ञान प्रकाश	२-००
कबीर की साखी	२-२५
पंथ सन्देश	३-००
शब्द गुञ्जार भाग १, २, ३	४-५०
विचार शक्ति अथवा मनोविज्ञान	१-५०
विचार दर्पण	१-००
फकीर भजनावली	१-००
जीवन सुधार	१-२५

शिक्षाप्रद, रोमांचकारी मोती और शाही सिलसिले के उपन्यास हैं

नई पुस्तकें

निर्वाण	१-००
सहज भक्ति	१-००
उस घर की खोज	१-००
अनुभव ज्ञान प्रकाश	१-००
हिसक मोती	२-००
ज्ञान योग	१-५०

ग्राहक सं० 397.

श्रीमान् C. Gajraj Mysker Hindi Pandit
Rathode Building
Pochamma Gali
Jumerat Bazar
Nizamabad (A.P.)

सम्पादक व प्रकाशक—
देवीचरन मीतल
लेखराज नगर,
अलीगढ़।

Printed by S.C. Mital, Dayal Printing Press, Aligarh